# Social Code

1. **PRESERVE AND PROMOTE OUR LANGUAGE;**
   - ✦ By conversing in Kashmiri with our children and encouraging them to learn, speak and interact in Kashmiri.
   - ✦ By interacting and speaking with out fellow community brethren in Kashmiri.
2. **PROTECT OUR IDENTITY;**
   - ✦ By imbibing a sense of pride in our unique social, cultural and spiritual traditions.
   - ✦ By maintaining our age-old social marital order and promoting and encouraging marriages within the fold.
3. **UPHOLD OUR TRADITIONS;**
   - ✦ By following the indigenous scientific Lunar calender in observing rituals, festivals, special occasions etc.
   - ✦ By celebrating birthday's, rituals, religious occasions and unique Kashmiri Pandit festivals.
4. **STRENGTHEN OUR BROTHERHOOD;**
   - ✦ By expanding our social circle and
   - ✦ By caring for each other; Mutual care is the only ray of hope for our Survival in Exile.
5. **STRENGTHEN SOCIO-CULTURAL INSTITUTIONS;**
   - ✦ Physically, intellectually and financially, as these are the pillars of our Identity.


## SATISAR FOUNDATION

उद्यमौ भैरवः

Post Box 118, Head Post Office Rani Talab, Jammu, J&K

CORRESPONDENCE:-

C/o 32-E, Shankar Vihar, Talab Tillo, Jammu 180002 (J&K)

OR

C/o:- 181 A, Sector 2, Pamposh Colony, Janipur, Jammu 180007 (J&K)

E-mail : satisar2000@yahoo.com

Visit us at : www.satisar.org

Tel.: 9419113414, 9419623511, 9906182398, 09191-2593948


High-Tech # 9906256577, 9419131650



# SATISAR FOUNDATION

## GLOBAL WORKSHOP ON

# ''श्री महा गणेश''

उद्यमौ भैरवः

**on 8th May. 2009 at 6.30 p.m.**

गणेश चतुदर्शी (शुक्रवार)

***Let us invoke the blessing of the "Ganesh Ji" who removes all obstacles.***

*Let cultural heritage be preserved & passed on, in its purest form, as it exited in Kashmir.*

***For Private Circulation - Not for Sale***

# SAMUHIK "MAHA GANESH" MANTRA RECITATION PROGRAMME

**What is in the Brahmanda (Macrocosm) is the Pinda (Microcosom). The heavenly 33 gods are also in our body. 7 Dhaduts like the blood, the bone etc, are the Vasuganas (वसुगण) in which the life dwells. 10 organs and the mind are 11 Rudragans (रुद्रगण) that cry and their craving make us weep. The 12 months are the Adityagan (आदित्यगण) throgh which the life cycle moves. Indra is the respiration which supplies energy to the Indriyas (इंद्रिया) to function. Prana is Prajapati that keeps the body alive.**

**The lord of these is Ganesha (The root & the Presiding one)**

अधर्मोपिचयो धर्मापचयो हि यदा भवेत्।
साधून, संरक्षितु दृष्टांस्ताडितुं सम्भंवाम्यहम्।।

उच्छिधार्धमनिचयं धर्म संस्थापयामि च।
हन्मि दुष्टांश्च नानालीलाकरो मुदा।।

**"Where there is increase in un righteousness and decline in righteousness, then in order to protect the virtuous people and punish the evil doers. I appear, Extirpating the heap of evil, I re-establish the virtues on the earth. I kill the evil-doers and the demons and play my role sportingly and joyfully"** ***(Ganesa Gita -III).***

**The Beez Mantra (Seed Mantra) if recited properly will immediately bestow the desired results. These rare mantras & stotras formed the routine of the daily puja (Thankur Puja) in our homes.**

**By reciting the Mantra & Stotra collectively at a single point of time world wide our difficulties will be overcome powered. The community & the country will have the effects of positive energy.**

**For a collective recitation, the foundation requests every Kashmiri Pandit (wherever he or she may) be to spare the time and should start the recitation as per the guidelines.**

***" Kindly stick to the time fixed"***

**-Vidhwat Mandala**

आहवानं नैव जानमि, नैव जानामि विसर्जनम
पूजा भागं न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरोः।।
उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा, उरसा,
वचसा, मनसा नमस्कारं करोमि नमः।।

The persons who will recites
these mantras in a loud voice,
with positive mind, faith and
devotion, meditating upon Lord
Ganesha will quickly attains
good health, untrainedness,
opportunity of reading and
learning accompaniment of
saints, worthy sons,
long and healthy life and eight
siddhis.
Shree Ganesh bless you all

**SH. KASHI NATH HANDOO**
*Jyotishacharya, Karam Kand Siromani*
*& Tantra Shastra Praveenak*

Price : Propagation & Promotion of Kashmiri Pandit Culture.

विध्नशैल वज्रिणं विनायकं नमाम्यहम्।।6।।

दक्ष यक्ष पक्षि मुख्य रक्षिताडिध्र युग्मकं
भुक्ति मुक्ति युक्ति शांति युक्त पूजितं विभुम्।
देवदेव वंश वृद्धि सिद्धि साधकं मुदा
विध्नशैल वज्रिणं विनायकं नमाम्यहम्।।7।।

देव दैत्य योगि सिद्ध चारणाभि सेवितं
सर्प खेट भूज भूत सडध्र साधु वेष्टितम्
ईप्सितार्थ दायकं विशेष कर्म कारकं
विध्नशैल वज्रिणं विनायकं नमाम्यहम्।।8।।

श्री विनायकाष्टकं हि शंकेरेण निर्मितं
शकंरस्य सौख्यदं भक्त विघ्न नाशकम्।
ये पठिन्त सादरं समस्त सिद्धिदं तवं
तं त्वभीष्ट सिद्धि पात्र भावमाप्नुवन्ति शम्
इति विनायकाष्टकम्

अब प्रसाद के रूप में किशमिश लाईये अथवा आटे के लड्डू लाईये तथा सभी जड-चेतन जगत को भोग लगाने के हेतु पढ़ें!

विनायकाय वल्लभा सहिताय श्री महागणेशाय वासुदेवादि देवभ्य: विष्णु पंचायतन देवताभ्य:

महा गायत्रे सावित्रे सरस्वती - मासस्य: - पक्षस्य - वासरायां तिथो ओं नमो नैवेघ्यम् नैवैंध्यामि नम:।

सभी जनो में प्रसाद बाँटे तथा स्वयं भी ग्रहण करें
अब अन्त में हाथ जोड़ कर क्षमा माँगे

Price : Propagation & Promotion of Kashmiri Pandit Culture.



# उों श्री गणेशाय नम:

श्री गणेश जी का नाम उच्चारण करके मूल मन्त्र का दशाम् *(Reciting 10 times)* करें तथा पुस्तक में दिये हुए स्तोत्रों में से कोई एक पढ़े अथवा मूल मन्त्र का ही 108 बार उच्चारण करें।

❄❄❄

यदि आप घर में, मन्दिर में अथवा किसी आश्रम में बैठे हो तो

धूप तथा दीप जला कर श्री गणेश जी सहित अन्य देवो को गन्ध इत्यादि अर्पण करें। उपस्थित सतजनों को भी टीका लगा कर जप प्रारम्भ करें।

यदि आप सफर में, कार्यालय अथवा दुकान पर बैठे हो तो जप मानसिक स्तर (Mental Level) पर करें।

## *अब पढ़े*

शुक्लाम्बर धरं विष्णुं, शशिवर्णं चतु: भुजम्, प्रसन्न वदनं ध्याये, सर्व विध्नोप शांन्तये। अभिप्रीतार्थं सिद्धयर्थं पूजितो य: सुरैरपि, सर्व विध्नच्छिदे तस्मैं, गणाधिपतये नम:।।

गुरु: ब्रह्म गुरु विष्णो गुरु साक्षात् महेश्वर:। गुरुवे जगत्सर्वं तस्मै श्री गुरुवे नम:।।

गुरुवे नम: परम गुरुवे नम: परमेष्टिने गुरवे नम: परमाचार्य नम: आद्य सिद्धेभ्यों नम:।।

गणेश जी की मूर्ति, अथवा फोटो पर पानी छिड़के अथवा सीधे संकल्प ले,

❄❄❄

**Japa and the Deity whose mantra is recited are identical. Says Shiv to Parvati**
**Beauteous one, mantra is my own form**

**-Kularnava**

अस्य श्रीमहागणपति मंत्रस्य ब्रह्म ऋषिः गायत्रं छन्दः महा **गणपतिः** देवता, **गं** बीजं, **ग्लूं** शक्तिः **नमः** कीलकं आत्मनो इह लोके सुख प्राप्तार्थं, पर लोके मुक्तिप्राप्तार्थं, पुत्र पोत्रादि सुख प्राप्तार्थं, शरीर पीडा निवारणार्थं, स्वेदशे शांति प्राप्तार्थं, आयु, आरोग्य, ऐष्वर्यं प्राप्तार्थं, सुतानां आयु ऐष्वर्य आरोग्य, विध्याप्राप्तार्थं (**Parents for the children**)

आत्मनः जिव्हाग्रे सरस्वती प्राप्तार्थं (**Students to Recite**)

महागणपते पाठे विनियोगः

,

## ध्यानं

विभ्रत दक्षिण हस्तपध्म युगले, दन्ताक्ष सूत्रे शुभे,
वामे मोदक पूर्णपात्र परशु नागो पवीति त्रिदृक्
श्रीमान् सिंह युगासनः श्रृतियुगे, शंखौ वहन् मौलिमान्ः
दिश्यात् ईश्वरपुत्र ईश भगवान् लम्बोदरः शर्म नः

**Dyanam is the personality of the god/goddess to be seated in mind during the recitation of Mantra & paath.**



# विनायकाष्टकम् - 4

एक्दन्तम् ईश्पुत्रमाखु वाहमीश्वरं
विध्नसंध ध्वान्त सूर्यम अन्तराय नायकम्।
अच्युत् आध्य शेष देव पूजितांध्रि पङ्कजं
विध्नशैल वज्रिणं विनायकं नमाम्यहम्।1।।

कामरुप धारिणं नागयज्ञ सूत्रिणं
कुङ्कमोत्थ कायकान्ति शोभितं वराननम्।
काञ्च नाभि भास्वरं च वासवादि वन्दितं
विध्नशैल वज्रिणं विनायकं नमाम्यहम।।2।।

नन्दि वाहन नन्दने सुरेन्द्र नाथ वन्दितं
नन्दि भृङ्गि नंद नाथ नारद आदि नृत्यकम्।
नंदगोप नागराज पूर्वकैः नमस्कृतं
विध्नशैल वज्रिणं विनायकं नामम्यहम्।।3।।

सर्पं वेष्टितोदरं च सर्प माल धारिणं
शङ्कर आदिपूजितं शिवात्मजं सुखात्मकम्।
सावधानता करं सरस्वती प्रदायकं
विध्नशैल वज्रिणं विनायकं नमाम्यहम्।।4।।

विध्न मत नागसिंहम उग्रनेत्र नासिकं
विध्न मेधजाल नाशकारि चण्ड मारुतम्।
विध्न दाव वहि्न वारि वारि वारि वाहकं
विध्नशैल वज्रिणं विनायकं नमाम्यहम्।।5।।

विध्न सिंधु वाडम् अग्नि इन्दु खण्ड मण्डितं
विध्न गोपम् अष्ट सिद्धि युक्त भक्त सेवितम्
शूर्प कर्ण वक्रतुण्ड कुम्भ गण्ड शोभितं

ध्यानदान कर्म धर्म युक्त शर्मदायक

कल्प वृक्ष दान दक्ष भक्त रक्ष रक्ष माम्।।6।।

आदि शक्ति पुत्र विध्न राज भक्तशड.कर,

दीनानाथ दीनलोक दैन्य दुःख नाशक।

अष्टसिद्धि दान दक्ष भक्त वृद्धि दायक,

कल्प वृक्ष दान दक्ष भक्त रक्ष रक्ष माम्।।7।।

शैव शक्ति सांख्य योग शुद्धवादि कीर्तित,

बौद्ध जैन सौरकार्म पाञ्चरात्र तर्कित।

वल्लभादि शक्ति युक्त देव भक्त वत्सल,

कल्प वृक्ष दान दक्ष भक्त रक्ष रक्ष माम्।।8।।

देव देव विध्न नाश देवदेव संस्तुत,

देव शत्रु दैत्य नाश जिष्णु विध्नकीर्तित।।

भक्तवर्ग पापनाश बुद्ध बुद्धि चिन्तित,

कल्प वृक्ष दान दक्ष भक्त रक्ष रक्ष माम्।।9।।

हे गणेश लोकपाल पूजिताङि्घ्र युग्मक,

धन्य लोक देन्य नाश पाश राशि भेदक।

रम्यरक्त धर्म सक्त भक्तचित्त पाप हन्,

कल्प वृक्ष दान दक्ष भक्त रक्ष रक्ष माम्।।10।।

ये पठन्ति विध्नराज भक्ति रक्त् चेतसः

स्त्रोत्र राजमेन सोप मुक्त शुद्ध चेतसः।

ईप्सितार्थम् ऋद्धि सिद्धि मंत्र सिद्ध भाषिताः

प्राप्नुवन्ति ते गणेश पाद पध्म भाविताः

*।। इति गणेश लीला।।*

Price : Propagation & Promotion of Kashmiri Pandit Culture.



**इस मूल मंत्र का 108 बार पाठ करें**

# उों ग्लूं गं गणपतये नमः- (108 बार)

**इनमें से किसी भी एक स्तोत्र का अथवा सबका पाठ करे।**

## अथ गणेशस्तोत्रम् - 1

ॐ लाक्षासिन्दूर वर्णं सुरवर निमितं मोदकैः मोदितास्यं

हस्ते दन्तं ददानं हिमकर सदृशं तेजसोग्रं त्रिनेत्रम्।

दक्षे रत्नाक्षसूत्रं वरपरशु धरं साखु सिंहासनस्थं

गांगेयं रौद्रमूर्तिं त्रिपुर वध करं विध्न भक्षं नमामि।।

गौरी पुत्रं त्रिनेत्रं गजमुख सहिंत नागयज्ञोपवीतं,

पध्माक्षं सर्वभक्षं सकलजन प्रियं सर्वगन्धर्व पूज्यम्।

संपूर्णं भालचन्द्रं वरदम् अतिबलं हन्तृकं चासुराणां,

हेरम्बम् आदिदेवं गणपतिम् अमलं सिद्धि दातारमीडे।।

यं ब्रह्म वेदान्तविदो वदन्ति परं प्रधानं पुरूषं तथान्ये,

विश्वोदग्तेः कारणम् ईष्वरं व तस्मै नमो विघ्नविनाशकाय।।

गजवदनम् अचिन्तयं तीक्ष्ण दन्तं त्रिनेत्रं, बृहद उदरम् अनन्तं दन्तमाले ददानम्।

परशुचषक पध्म द्वन्द्वहस्तार विन्दं, हरियुगलनिविष्टं श्री गणेशं भजामि।।

अभय वरद पाणिं लडडु पात्रं सुदन्तं नरपति जपमालां नाग पाश अड.कुशं च।

कनक मय विचित्रं मुदग्रं पाणि पध्मे परशुम् अपि वहन्तं विध्न राजं नमामि।।

विध्नेशं विश्व वन्ध्यं सुविपुल यशसं लोकरक्षा प्रदक्षं साक्षात् सर्व आपदासु प्रशमनसुमतिं र्पावतीप्राण सूनुम्।

प्रायः सर्वा सुरेन्द्रैः ससुर मुनिगणैः साधकैः पूज्यमानं कारूण्येन अंतराया अमित भय शमनं विध्न राजं नमामि।।

उच्चैः बह्माण्ड खण्डद्वितय सहचरं कुम्भ युग्मं दधानः

प्रेड.खन् नागारिपक्ष प्रति भट विकट श्रोत्रतालाभिरामः।

देव्याः शम्भोरपत्यं भुजगपति तनुस्पर्धिवर्धिष्णु हस्तः

त्रेलोक्य आश्चर्य मूर्तिः स भवतु सततं भूतये कुञ्जरास्यः।।

नमो नमो गजेन्द्राय एक दन्त दराय च।

नम ईश्वर पुत्राय गणेशाय नमो नमः।।

माता यस्य उमादेवी पिता यस्य महेश्वरः।

मूषको वाहनं यस्य स नः पायाद गणाधिपः।।

वन्दे वराभय पिनाक कपाल खड्ग खट्वाडग़ दंत मुसल आब्जकरं त्रिनेत्रम्।

भीमं जटा मुकुटिनं कमल आसनस्थं कश्मीर वासम् अमलं गणराजम् आध्यम्।।

रक्ताड.ग रागं परश्व अक्ष माला सुदन्तपाणिं सितलडडु पात्रम्।

गजाननं सिंह रथाधिरूढं गणेश्वरं विध्न हरं नमामि।।

संसिद्धयर्थ नमत्सुरासुरमिलन्मौलि स्थित प्रोल्लसत्सद्

रत्न प्रभव प्रकृष्ट विभव प्रेड.खन्मयूखो उज्जवलत्।

श्रेयो विध्न महा भय प्रशमने दिव्यं यद एक औषधं,

भूयान्नो द्विरदाननाडिध्रि कमल द्वन्द्वं तदिष्टाप्तये।।

विभ्रत् पञ्च मुखानि योयम उदितः स्वातन्त्र्य मात्र

आत्मना शक्तेः वैभवतः पर प्रतिहत् अद्वैताख्य विघ्न व्ययः।

एकी भूत मुखः सकारण गणानुकारिणा तेजसा

देवः संप्रति भासतां मयि यथा तत्वं गणाधीश्वरः।।



# अथ गणेश लीलास्तुति - 2

अद्रिराज ज्येष्ठपुत्र है गणेश विध्नहन्

पद्मयुग्म दंत लडडुपात्रम् आल्यहस्तक।

सिंह युग्म वाहनस्थ भाल नेत्र शोभित

कल्प वृक्ष दान दक्ष भक्त रक्ष रक्ष माम्।1।।

एक दन्त वक्रतुण्ड नागयज्ञ सूत्रक,

सोम सूर्य वह्िन मेयमान मातृ नेत्रक।

रत्न जाल चित्रमाल भाल चन्द्र शोभित

कल्प वृक्ष दान दक्ष भक्त रक्ष रक्ष माम्।।2।।

वह्िन सूर्य सोम कोटि लक्षतेज साधिक,

ध्योतमान विश्व हेति वेचिवर्ग भासक।

विश्वकर्तृ विश्वभर्तृ विश्वहर्तृ वन्दित

कल्प वृक्ष दान दक्ष भक्तरक्ष रक्ष माम्।।3।।

स्वप्रभाव भूत भव्य भाविभाव भासक,

काल जाल बद्ध वृद्ध बाल लोकपालक।

ऋद्धि सिद्धि बुद्धि वृद्धि भुक्ति मुक्ति दायक

कल्प वृक्ष दान दक्ष भक्तरक्ष रक्ष माम्।।4।।

मूषकस्थ विध्नभक्ष्य रक्तवर्णमाल्य,

धृन्मोदकादि मोदितास्य देव वृन्दवन्दित।

स्वर्णदीसुपुत्र रौद्ररूप दैत्यमर्दन,

कल्प वृक्ष दान दक्ष भक्त रक्ष रक्ष माम्।।5।।

ब्रह्म शम्भु विष्णु जिष्णु सूर्य सोम चारण

देव दैत्य नाग यक्ष लोकपाल संस्तुत।

विजयं वै गन्धवने देवादारुवने गणम्।
आर्तानां विघ्न हरणं गङ्गा सागर सङ्गमे।।
महापथे विरुपाक्षं चित्रसेनं तु पुष्करे।
दुर्जयं यमुनातीरे स्तम्भनं गन्धमादने।।
अम्बरीषं भद्रवटे मोहनं हस्तिनः पुरे।
किष्किन्धायाम उग्रकेतुं लङ्कायां तु विभीषणम्।।
कलिङ्गे वरूणं चैव विन्ध्यपादे मदोत्कटम्।
अश्वत्थं च तुरूष्केषु चीनेषु त्रिशिखायुघ्यम्।।
वज्र हस्तं कौसलेषु दक्षिणात्येषु लोहितम्।
शूलोद्धतकरं चैव मध्यदेशे प्रकीर्तितम्।।
एकदंष्ट्रं पश्चिमाद्रौ पूर्वदेशे अपराजितम्।
उत्तरे चारुवक्त्रं च वरिष्ठं त्रिपुरेषु च।।
हिरण्य कवचं चैव गिरि सन्धिषु संस्थितम्।
सुमुखं नागरन्ध्रेषु नर्मदायां च षडभुजम्।।
मायापुर्याम हामायं भद्रर्कणहृदे शिवम्।
गोकर्णे गजकर्णं च कान्यकुब्जे वराननम्।।
पध्मासनं कामरूपे श्रीमुखं सर्वतः स्थितम्।
वेदवेदाङ्ग शास्त्रेषु चिन्तयेत् गणनायकम।।
अष्टाषष्टिः अस्तु नामानि स्तुतान्य अद्भुत कर्मणः।
नित्यं प्रभात काले तु चिन्तयेत् सर्वं सिद्धिदम्।।
एतत् स्तोत्रं पवित्रं त मङ्गल पापनाशनम्।
शस्त्रखर्खोद वेताल यक्ष रक्षोभयापहम्।।
चौरारण्य भय व्याध्र व्याधि दुर्भिक्ष नाशनम्।
कृत्यादि माया शमनं सर्वं शत्रु विमर्दनम्।।
त्रिसन्ध्यं यः पठेदेतत्स भवेत् सर्वसिद्धि भाक्।
गणेश्वर प्रसादेन लभते शाङ्करं पदम्।।

**इत्यादि पुराणे श्री गणेश स्तोत्रम्।।**



हस्तीन्द्राननम् इन्दु चूडम् अरुणच्छायं त्रिनेत्रं
रसादाश्लिष्टं प्रियया सपध्मकरया स्वाड.कस्थया सन्ततम्।
बीजापूर गदा धनुःत्रिशिखयुक चक्र आब्ज पाशोत्पल
ब्रीह्यग्रस्थ विषाण रत्न कलशान् हस्तैः वहन्तं भजे।।
देवं स्थूलतनुं गजेन्द्र वदनं लम्बोदरं सुंदरं,
विध्नेशं मद गन्धलोल मधुव्यालोल गण्डस्थलम्।
दन्ताघात विदारित आहित जनं सिंदूर शोभाकरं,
वन्दे शैल सुता सुतं गणपतिं सिद्धि प्रदं कामदम्।।
द्विचतुर्दश वर्ण भूषिताङगं मुसलाम्भोजधरं महोपवीतम्।
द्विमृगाधिपगामिनं त्रिनेत्रं हरपुत्रं द्विरदाननं भजे अह्म।।

जटा मुकुट मण्डितं त्रिनयनं भजे, षड्भुजं सतीसर निवासिनम असुर नाशनं लोहितम्।

वराभय पिनाकिनं त्व सिकपालभृच्छूलिनं गणैः वृत गणेश्वरं कमलगं च भीमाकृतिम्।।

गजाननं भूतगणधि सेवितं कपित्थ जाम्बूफल सार भक्षणम्।

उमापतेः शोक विनाश कारणं, नमामि विश्वेश्वरमाशु सिद्धिदम्।।

लम्बोदर एकवदनः कमल आसनस्थ च चन्द्रार्ध मौलिरमलो भुजगेन्द्र हारः।

भीमो अष्ट बाहुरुदितार्क मरीचिरष्ट सिद्धि प्रदो भवतु वाञ्छित सिद्धिदो नः।।

यो अभ्यार्चितः सुरगणैः वरसिद्धि हंतोश्छेत्तुं भयानि च करे परशुं दधानः।

देवः स शम्भुदयिता परिवर्धित श्री विघ्नान्निवारयतु वारणराजवक्त्र।।

❋❋❋

# श्री गणेशाय नमः - 3

विभ्रद दक्षिण हस्त पध्म युगले दन्ताक्षसूत्रे शुभे

वामे मोदक पूर्णपात्र परशू नागेपवीती त्रिदृक्।

श्रीमान् सिंहयुगासनः श्रृतियुगे शड.खौ वहन् मौलिमान्।

दिश्यात् ईश्वरपुत्र एष भगवान् लम्बोदरः शर्म नः।।

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्

प्रसन्न वदनं ध्यायेत् सर्व विध्नोंप शान्तये

अभिप्रीतार्थं सिद्धयर्थं पूजितो यः सुरैरपि।

सर्वं विघ्नच् छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः।।

गणानामधिपत् चण्डो गजवक्त्र त्रिलोचनः।

प्रसन्नो भवतान् नित्यं वरदाता विनायकः।।

सुमुखश्च्च एकदन्तशच कपिलो गजकर्णकः।

लम्बोदरश्च विकटो विघ्नराजो विनायकः।।

धूम्रकेतुः गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।

द्वादशै तानि नामानि गणेशस्य समाहितः।।

यः पठेतु शिवोक्तानि स लभेत् सिद्धिम उत्तमाम्।

विद्यारम्भे विवाहं च प्रवेशे निर्गमे तथा। संग्रामे संकटे चैव विघ्न तस्य न जायते।। ओं।। चिदचिद् पदगम्भीरं गमागम पदोज्झित्म। गहनाकाश संकाशं वन्दे देवं गणेश्वरम्।।

*Price : Propagation & Promotion of Kashmiri Pandit Culture.*



श्री सनत कुमार उवाचः-

शड.कराह ब्रह्मणा प्राप्तं पद्मयोनेर्मया प्रभो
त्दहं कीर्तियिष्यामि स्तोत्रं परम दुर्लभं।।
षष्ठयां चतुर्थ्याम् अष्टम्यां चतुर्दश्यां च भक्तितः।
पूज्येश्च गणाध्यक्षं श्रद्धा भक्ति समन्वितः।।
अर्धैः पुष्पैस्तथा धूपैःदीपैः माल्यैश्च चामरैः।
वस्त्रैः कुण्डल केयूरैः मौलिभिश्च वितानकैः।।
भक्ष्यैः भोज्यैरपूपैश्च मत्स्यैः मांसैश्च्च मोदकैः।
पानकैः फलमूलैश्च्च होमैः मंत्रादिभिः तथा।।
गड.गा ह्रदे तु गाङगेयं श्री शैले तु गणेश्वरम्।
वाराणस्यां गजमुखं गयायां टंकधारिणम्।।
प्रयागे तु गणाध्यक्षं केदारे विकटाननम्।
लम्बोदरं कुरूक्षेत्रे नैमिषे च मदोत्कटम्।।
जम्बकं दण्डकारण्ये लोकेशं हिमवद् गिरौ।
विश्वक्सेनं च विन्ध्याद्रौ मलये हेमकुम्भकम्।।
नायकं पुष्करद्वीपे विघ्नेशं शल्मलौ स्थितम्।
इलावृते विश्वरूपं हरिवर्षे घटोदरम्।।
त्रिनेत्रं सिंहलद्वीपे श्वेतद्वीपे तु वामनम्।
उज्जयिन्यां तु लम्बोष्ठं मालवे शूर्प कर्णकम्।।
सौराष्ट्रे वरदं नित्यं काश्मीरे भीम रूपिणम्।
सिन्धु सागरयोः मध्ये, विक्षेयं मंत्र नायकम्।।
हर्यक्षं यक्षभवने कैलासे परमेश्वरम्।
महोदरं तु लुम्पायां चम्पायां शिखिवाहनम्।।
पाशहस्तं त्रिकूटेषु पूजयेत्सर्व सिद्धिदम्।
बलमग्नि गुहायां तु पाटले सिंह वाहनम्।।
पौण्ड्रे रौद्रमुखं चापि कलापि ग्रामके जयम्।
मेरूपृष्ठे कामरूपं नन्दनं नन्दने वने।।